रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग, डी.के. कालेज
डुमराँव बक्सर

भक्त कवि सूरदास –

नंद जू मेरे मन आनंद भयो,
हौ गोवर्धन तै आयो ।

है हरि भजन को परमान ।
नीच पावै ऊँच पद्वी, बाजते नीसान ॥

शोभित कर नवनीत लिए ।
घुटुरुन चलन रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए॥

सिखवत चलन जसोदा मैया ।
अरबराय कर पानि गहावति,
डगमगाय धरै पैयाँ ॥

पाहुनि करि दै तनक मह्यौ ।
आरि करै मनमोहन मेरो, अंचल आनि गह्यौ ॥

मैया कबहि बढ़ैगी चोटी !
कितिक बार मोहि दूध पियत भइ,
यह अजहूँ है छोटी ॥

खेलत में को काको गोसैयाँ !

धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी।
एक धार दोहनि पहुँचावत एक
धार जहँ प्यारी डाढ़ी॥

देखि री। हरि के चंचल नैन।
खंजन मीन मृगज चपलाई
नहिं पटतर एक सैन॥
मेरे नैन बिरह की बेली बई।
सींचत नैन नीर के, सजनी! मूल पतार गई॥

मुरली तऊ गोपालहि भावति।

मधुबन तुम कत रहत हरे।

ऊधौ! तुम अपनो जतन करौ।

निर्गुन कौन देस को बासी?
मधुकर हँसि समुझाय सौंह दै बूझति सांच न हांसी॥

बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति, काकी है बेटी,
देखी नहीं कहूँ ब्रज खोरी॥

मानौ माई घन-घन अंतर दामिनी॥

प्रभु हौं सब पतितन को टीकौ।

रूपरेख-गुन जाति-जुगति-बिनु निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातैं सूर-सगुन पद गावै॥

जसोदा हरि पालने झुलावैं।
हलरावैं, दुलरावै, मल्हावैं, जोई सोइ कछु गावैं।

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ।

फटि न गई ब्रज की छाती कत ये सूल सहे।

नंद ब्रज लीजै ठोंकि बजाय।

ललिकाई को प्रेम कहौ
अलि कैसे हरि के छूटत॥

हरि है राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो?
समाचार कछु पाए?

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज डुमरॉव बक्सर